हिंदी-7

अध्याय-1. स्वर्ग से भी अच्छा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** कवि ने अपने देश को स्वर्ग से भी अच्छा बताया है। **(ख)** भारत में चिंतन का केंद्र तपोवनों में रहा है। **(ग)** भारत ने सबके कल्याण की कामना की है। **(घ)** सारा दर्शन कुदरत के अंचलों में पनपा है।
2. **(क)** प्रस्तुत पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि भारत अपने आचरण से कड़वा बोलने वालों को भी साथ लेता हुआ चलता है। कुछ लोग हमेशा इसकी बुराई करते रहते हैं लेकिन यह फिर भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रहता है। **(ख)** भारत की सोच सदा ऐसी ही रही है कि पृथ्वी तथा आकाश सभी के लिए हैं, आग, पानी, ऊर्जा तथा वायु का प्रयोग सभी के लिए है। कुदरत का खजाना सभी के लिए खुला पड़ा है। **(ग)** कविता की अंतिम तीन पंक्तियों में कवि ने बताया है कि भारत की हमेशा से यह कामना रही है कि विश्व में सभी स्वस्थ हों, सुखी हों तथा सभी का कल्याण हो क्योंकि सारी दुनिया एक परिवार के समान है। भारत का सदैव से नारा है—'वसुधैव कुटुंबकम'।
3. **भाव**—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है भारत में ऋषि-मुनियों ने वनों में चिंतन किया है। उन्होंने सारे दर्शन तथा ज्ञान कुदरत के आँचल से प्राप्त किए हैं। उनका जीवन सादा तथा विचार उच्च रहे हैं।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** सुंदरता **(ख)** ऊँचाई **(ग)** सुदृढ़ता **(घ)** सादगी **(ङ)** स्वास्थ्य **(च)** सुखद
2. **(क)** नभ, अंबर, आकाश **(ख)** पहाड़, गिरि, अचल **(ग)** बाग, उपवन, उद्यान **(घ)** सागर, जलधि, पयोधि **(ङ)** भूमि, पृथ्वी, वसुंधरा
3. स्वयं कीजिए।

अध्याय-2. सच्चा तीर्थयात्री

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** एलिशा बड़ा दयालु, ईश्वरभक्त तथा प्रसन्नचित्त व्यक्ति था। **(ख)** दोनों मित्रों ने एक बार तय किया कि वे साथ-साथ यरुशलम की यात्रा पर जाएँगे। **(ग)** एलिशा झोंपड़ी में रहने वाले व्यक्तियों की सेवा के लिए वहीं रुक गया। **(घ)** एलिशा ने उनके लिए आवश्यक चीज़ें खरीदीं, उसकी सेवा से धीरे-धीरे उन लोगों में फिर शक्ति आ रही थी।

उन लोगों के दूध के लिए एक गाय और उनका खेत जोतने के लिए एक घोड़ा खरीदा। साथ ही फसल आने तक उनके लिए अनाज खरीदकर रख दिया था।

2. **(क)** झोंपड़ी के अंदर का दृश्य बड़ा कारुणिक था। एक स्त्री मरणासन्न स्थिति में ज़मीन पर पड़ी थी। एक बच्चा चारपाई पर बैठा 'रोटी-रोटी' चिल्ला रहा था। तभी एक आदमी लड़खड़ाता हुआ आया और धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। **(ख)** एलिशा यरुशलम इसलिए नहीं जा सका क्योंकि वह झोंपड़ी में रहने वाले बीमार व्यक्तियों की सहायता करना चाहता था। **(ग)** एफिम ने गिरजाघर के भीतरी भाग में दीपकों के पीछे अपने मित्र एलिशा को पादरी की तरह हाथ फैलाए हुए देखा।
3. लेखक इस पंक्ति के माध्यम से कहना चाहता है कि मनुष्य को तीर्थ यात्रा पर जाते समय अपने तन, धन की चिंता नहीं करनी चाहिए। सबसे बड़ी ईश्वर भक्ति और सेवा जरूरतमंदों की सेवा करना है, जिस प्रकार एलिशा ने की जबकि गिरजाघर में एफिम को अपने पैसों की चिंता थी। उसका ध्यान ईश्वर में नहीं पैसों में था। अत: सच्ची भक्ति के लिए मोह माया का त्याग जरूरी है। प्राणी मात्र की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** अंदर **(ख)** धीरे-धीरे **(ग)** इधर-उधर **(घ)** सदा **(ङ)** वहीं
2. **(क)** नि: + देश **(ख)** मरण + आसन्न **(ग)** दु: + गंध **(घ)** सु + आगत **(ङ)** मन: + दशा
3. **(क)** बहुत बुरी दशा होना—बाढ़ के कारण चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। **(ख)** तुरंत खा जाना—बंदर देखते ही देखते सारे केले चट कर गया। **(ग)** दुखी होना—अमित की दयनीय दशा देखकर रोहन का मन भर गया। **(घ)** तुरंत—सबके देखते ही देखते चोर पर्स लेकर भाग गया। **(ङ)** एक-दूसरे की आँखों में देखना—सत्य बोलने वाला हमेशा आँख से आँख मिलाकर बात करता है।

अध्याय-3. नेता जी सुभाषचंद्र बोस

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक में हुआ था। **(ख)** सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु देशबंधु चितरंजनदास थे। **(ग)** अमेरिका ने जापान के नागासाकी और हिरोशिमा शहरों पर परमाणु बम गिराए। **(घ)** नेता जी सुभाषचंद्र बोस का विमान 12 अगस्त, 1945 को दुर्घटनाग्रस्त हुआ।
2. **(क)** सुभाषचंद्र बोस पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि वे छात्र जीवन से ही दुखियों और निर्धनों की सेवा करने लगे।

(ख) सरकार ने सुभाषचंद्र बोस को रिहा करने के लिए शर्त रखी कि रिहा होते ही वे देश छोड़कर चले जाएँगे। **(ग)** सुभाष बाबू को लगा कि जर्मनी में उनका उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा, इसलिए 1942 में वे जापान चले गए।

3. **(क)** सुभाषचंद्र बोस भारत देश को किसी भी कीमत पर अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराना चाहते थे। चाहे इसके लिए उन्हें हिंसा का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। **(ख)** युद्ध में कभी कोई दल जीतता हुआ महसूस होता है तो कभी कोई दल। युद्ध में कभी भी पासा पलट सकता है।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** वर्तमान काल **(ख)** भूतकाल **(ग)** वर्तमान काल **(घ)** भूतकाल **(ङ)** भविष्यत् काल
2. स्वयं कीजिए।
3. **(क)** धोखा देना—दुकानदार लोगों की आँखों में धूल झोंककर सामान तोल रहा था। **(ख)** पछताना—बिल्ली को देखते ही चूहा अपने बिल में घुस गया और बिल्ली हाथ मलते रह गई। **(ग)** हरा देना—मैच के दौरान विराट कोहली ने विरोधी टीम के छक्के छुड़ा दिए। **(घ)** बाजी बदल जाना—भारतीय सेना ने पासा पलटते हुए दुश्मनों को दूर तक खदेड़ दिया। **(ङ)** हार मानना—हमें कभी भी कठिनाइयों के सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए।

अध्याय-4. मित्रता

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **(ख)** 2. **(क)** 3. **(ग)**

लिखित प्रश्न

1. **(क)** हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। **(ख)** डेमेट्रियस मकदूनिया का शासक था। **(ग)** बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। **(घ)** हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति से बचो।
2. **(क)** अच्छा मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। अच्छा मित्र प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय का हो, मृदुल और पुरुषार्थी हो, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हो, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा। **(ख)** दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें

वे गुण हों। चिंतनशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। **(ग)** मित्र बनाते समय निम्न सावधानियाँ रखनी चाहिए ऐसे लोगों को मित्र न बनाओ, जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो। **(घ)** हमें ऐसे लोगों को मित्र नहीं बनाना चाहिए जिनका हृदय नीचाश्यों और कुत्सित विचारों से कलुषित है।

3. कुसंग का ज्वर अर्थात् बुरी संगत सबसे भयानक होता है। बुरी संगति से हमारी बुद्धि भी भ्रष्ट होती है तथा हम अच्छी बातों के विषय में नहीं सोचते तथा हमेशा बुरी बातों के बारे में सोचते रहते हैं।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** विश्वासपात्र **(ख)** अलभ्य **(ग)** सहपाठी **(घ)** इच्छित **(ङ)** नाशोन्मुख

2. **(क)** हत + उत्साहित — गुण संधि **(ख)** सह + अनुभूति — स्वर संधि **(ग)** उच्च + आकांक्षा — स्वर संधि **(घ)** यदि + अपि — यण संधि **(ङ)** नीच + आशय — स्वर संधि **(च)** नाश + उन्मुख — गुण संधि **(छ)** उत् + नति — व्यंजन संधि

3. **(ख)** बाल्यावस्था **(ग)** युवावस्था **(घ)** तरुणावस्था **(ङ)** किशोरावस्था **(च)** वृद्धावस्था **(छ)** रुग्णावस्था **(ज)** दीनावस्था

अध्याय-5. जलाओ दीये

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** इस कविता में 'मर्त्य मिट्टी' नश्वर शरीर को कहा गया है। **(ख)** मनुजता तब तक पूर्ण नहीं बन सकती जब तक भूमि लहू के लिए प्यासी होगी। **(ग)** केवल दीपक के प्रकाश से धरती का अँधेरा नहीं मिट सकता।

2. **(क)** नहीं, आकाश के ग्रह-नक्षत्र मनुष्य के हृदय में प्रकाश नहीं फैला सकते हैं। **(ख)** कवि इतना प्रकाश चाहता है कि पृथ्वी पर कहीं भी अँधेरा न रह जाए। **(ग)** संसार का अँधेरा तभी दूर हो सकता है जब मनुष्य स्वयं दीपक बनकर संसार को प्रकाशित करे अर्थात् ज्ञान तथा मानवता के प्रकाश से संसार को आलोकित करे।

3. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि नई ज्योति अर्थात् ज्ञान रूपी पंख प्राप्त करके यह नश्वर शरीर स्वर्ग चला जाएगा। ज्ञान का इतना प्रकाश फैले कि रात में अँधेरा भी भटक जाए अर्थात् रास्ता भूल जाए, मुक्ति का वह द्वार खुले जिससे सुबह जाए नहीं और रात आए नहीं अर्थात् मानवता तथा ज्ञान के प्रकाश से कहीं भी अंधकार नहीं रहे।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** दीपक **(ख)** अंधकार **(ग)** मृदा **(घ)** नक्षत्र **(ङ)** उजाला **(च)** नाश
2. स्वयं कीजिए।
3. **(क)** प्रकाश, रश्मि, प्रभा, दीप्ति **(ख)** नभ, अंबर, आकाश, व्योम **(ग)** रात, रात्रि, यामिनी, रजनी **(घ)** मार्ग, पथ, रास्ता, डगर **(ङ)** भूमि, वसुंधरा, पृथ्वी, वसुधा **(च)** अंधकार, अँधेरा, तम, तमस

अध्याय-6. बीमार का इलाज

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** विनोद इलाहाबाद से आया था। **(ख)** कांति का घर आगरा में था। **(ग)** सरस्वती विनोद का इलाज पंडित हरिचंद से करवाना चाहती थी। **(घ)** पंडित जी मार्जन द्वारा विनोद का इलाज करने आए थे।
2. **(क)** चंद्रकांत डॉक्टर भटनागर से इसलिए नाराज़ थे क्योंकि उन्होंने प्रतिमा का केस खराब कर दिया था। **(ख)** सरस्वती ने विनोद के इलाज के लिए पंडित जी को मार्जन के लिए तथा हरिचंद वैद्य को दवाई देने के लिए बुलाया। **(ग)** सुखिया घर का बूढ़ा नौकर था। उसने विनोद के इलाज के लिए एक ओझा से झाड़ फूँक कराई थी तथा उसका पानी विनोद के लिए लाया था।
3. इसका आशय है कि कड़वी औषधि लिए बिना शरीर का ताप नहीं मिटता। बुखार से छुटकारा पाने के लिए कड़वी दवा पीना आवश्यक होता है। स्वस्थ होने के लिए कड़वी औषधि तो पीनी ही पड़ती है।
4. **(क)** कांति ने चंद्रकांत से **(ख)** विनोद ने कांति से
   (ग) सरस्वती ने विनोद से **(घ)** प्रतिमा ने सरस्वती से
   (ङ) सुखिया ने सरस्वती से

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** विधानवाचक **(ख)** निषेधवाचक **(ग)** विस्मयादिबोधक **(घ)** प्रश्नवाचक
2. **(क)** वर्तमान काल **(ख)** वर्तमान काल **(ग)** भविष्यत् काल **(घ)** भूतकाल
3. **(क)** रोहित अपने समवयस्क मित्र अमित के साथ ताजमहल देखने आगरा गया। **(ख)** राम ने रावण के ऊपर मंत्राभिषिक्त बाण छोड़ा जिससे उसकी मृत्यु हो गई। **(ग)** सच का मार्ग कितना भी ऊबड़-खाबड़ क्यों न हो वही हमें सफलता की ओर ले जाता है। **(घ)** पुराने समय में लोग जल-दूर्वा की सहायता से रोगी का इलाज करते थे। **(ङ)** अब जल-दूर्वा से कुछ नहीं होगा इन्हें तो बस दवाओं की आवश्यकता है।

अध्याय-7. महाराणा प्रताप

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (घ)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 को कुंभलगढ़, राजस्थान में हुआ था। **(ख)** महाराणा प्रताप के पिता राणा उदयसिंह थे। **(ग)** महाराणा प्रताप की धन से सहायता भामाशाह ने की थी। **(घ)** महाराणा प्रताप की मृत्यु 29 जनवरी, 1597 को हुई थी।
2. **(क)** हल्दीघाटी का युद्ध महाराणा प्रताप और अकबर के बीच हुआ था। **(ख)** झाला महाराणा प्रताप की सेना में एक सरदार था। युद्ध के दौरान उसने देखा कि महाराणा प्रताप शत्रुओं के बीच अकेले घिर गए हैं और उनके प्राण संकट में हैं। उसने तुरंत अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। वह भीषण मार-काट करता हुआ महाराणा तक पहुँचा और उनका मुकुट उतारकर अपने सिर पर रख लिया। मुगल सैनिक झाला को ही महाराणा समझकर उस पर टूट पड़े। वीर झाला बड़ी वीरता से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गया, परंतु उसने महाराणा के बहुमूल्य प्राणों की रक्षा की। **(ग)** शक्ति सिंह महाराणा प्रताप का छोटा भाई था। उसने महाराणा प्रताप का पीछा करने वाले मुगल सैनिकों को मार गिराया और अपने भाई के प्राणों की रक्षा की।
3. भाव-इस पंक्ति का भाव है कि यदि महाराणा प्रताप को सुख वैभव के प्रति मोह होता तो वे अन्य राजपूत राजाओं की भाँति अकबर की दासता स्वीकार कर लेते, लेकिन उन्होंने वैसा नहीं किया। अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। उन्होंने वैभव विलास की अपेक्षा अपने आत्मसम्मान और मातृभूमि को अधिक महत्व दिया।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** अग्रगण्य **(ख)** अतुलनीय **(ग)** यशस्वी **(घ)** अदम्य **(ङ)** अडिग
2. **(क)** वर्तमान काल **(ख)** भूतकाल **(ग)** वर्तमान काल **(घ)** भूतकाल **(ङ)** भविष्यत् काल।
3. **(क)** युद्ध करते हुए झाला सरदार अकेला पड़ गया और वीरगति को प्राप्त हुआ। **(ख)** कारगिल के युद्ध में भारतीय सेना ने दुश्मन सेना के छक्के छुड़ा दिए। **(ग)** महाराणा प्रताप अपने सैनिकों के साथ मुगल सैनिकों पर टूट पड़े।

अध्याय-8. ईदगाह

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** ईद के दिन बच्चे इसलिए प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें मेला देखने जाना था। **(ख)** हामिद की दादी को यह चिंता थी कि भीड़-भाड़ में वह कहीं खो न जाए। **(ग)** हामिद ने चिमटा

अपनी दादी के लिए खरीदा। **(घ)** अमीना को हामिद पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि बच्चे ने पूरे दिन कुछ भी नहीं खाया और अपनी दादी के लिए चिमटा ले आया।

2. **(क)** हामिद को ईदगाह भेजते समय अमीना का दिल कचपचा रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा कौन है? उसे कैसे मेले में जाने दे? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए, तो क्या हो? नन्हीं-सी जान! तीन कोस पैदल कैसे चलेगा? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। **(ख)** जब हामिद ईदगाह पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ ऊपर इमली के पेड़ों की घनी छाया है। नीचे पक्का फ़र्श है, जिस पर बिछायत हो रही है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के बाद एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं। नए आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। धन और पद का यहाँ कोई प्रश्न नहीं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुकते हैं। फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ जल उठे और फिर एक साथ बुझ जाएँ। अपूर्व दृश्य था। **(ग)** मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और वह खुशी के मारे जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ गिरे और सुरलोक सिधारे। मियाँ नूरे ने दीवार पर दो खूटियाँ गाड़ीं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा। पटरे पर कागज़ का कालीन रखा गया और नूरे के वकील साहब उस पर राजा की तरह विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब लुढ़क पड़े और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। रहा महमूद का सिपाही, उसके लिए एक टोकरी आई। उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही आराम से लेटे। महमूद ने टोकरी उठाई और द्वार पर चक्कर लगाने लगा। उसके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ़ से 'जागते रहो' पुकारते चले। इतने में महमूद को ठोकर लगी। टोकरी नीचे गिरी और उसके साथ मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए ज़मीन पर आ रहे। बेचारे की एक टाँग टूट गई।

3. हामिद के चिमटे को देखकर जब उसके साथी उस पर हँसते हैं तो वह उनके खिलौनों की वास्तविकता से अवगत कराता है कि आप सभी के खिलौने मिट्टी के बने हैं और मिट्टी में ही मिल जाएँगे। मेरा चिमटा सदाबहार है, यह शेर से भी लड़ सकता है। आपके खिलौने कुछ नहीं कर सकते।

4. **(क)** ङ **(ख)** ग **(ग)** घ **(घ)** च **(ङ)** ख **(च)** छ **(छ)** ज **(ज)** क

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** अभूतपूर्व **(ख)** मनोहर **(ग)** गरीबसूरत **(घ)** अभियुक्त **(ङ)** नासमझ

2. स्वयं कीजिए।

3. **(क)** घमंड करना—भाई, मिजाज दिखाने से कुछ नहीं होने का। कुछ करके दिखाइए। **(ख)** निराश हो जाना—आँचल के खोने को सुनकर अमित का दिल बैठ गया। **(ग)** बेहाल होना—जंगली हाथी को सामने देखकर लोगों के छक्के छूट गए। **(घ)** प्रभाव डालना—जसलीन ने अपनी मधुर आवाज़ से संगीत की महफिल में रंग

जमा दिया। **(ङ)** मर जाना—भयंकर सर्दी में गरीब भिखारी का माटी का चोला माटी में मिल गया।

अध्याय-9. बीज

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ख)

लिखित प्रश्न

1. (क) कवि ने बीज को सरसों के बीज से छोटा बताया है। **(ख)** बीज के अंदर बरगद का पेड़ बंद है। **(ग)** बीज जीवन और स्वतंत्रता पाने को आतुर है। **(घ)** बीज की सबसे बड़ी विशेषता यह है किं वह धरती को फोड़कर अर्थात संघर्ष करके बाहर निकलता है। कमजोर अंकुर जीवित रहने की शक्ति प्राप्त करता है और एक सख्त और मजबूत पौधे में विकसित होता है।

2. (क) बीज अपने हृदय में डाली, पत्ती, तना, जल, हरियाली का संसार, अनेक रंग के फल और फूल को छिपाए रहता है। **(ख)** 'वह एक बूँद सागर अपार' से आशय है कि बूँद-बूँद से विशाल सागर बनता है। यह एक आश्चर्य है कि छोटी-सी बूँद से सागर कैसे बन जाता है। **(ग)** कवि ने बीज को 'अमर पुत्र' इसलिए कहा है क्योंकि बीज के अंदर फल होता है तथा फल के अंदर बीज होता है। इस प्रकार बीज अमर होता है तथा कभी नष्ट नहीं होता।

3. भावार्थ—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि बीज के अंदर जीवनरूपी अंकुर बंदी है जो संपूर्ण विश्व के बंधनों को तोड़कर अपने जीवन तथा स्वतंत्रता को पाने को आतुर है। तथा जड़ निद्रा से जागकर चेतन बनना चाहता है।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. गहरा — अंधकार; क्षुद्र — चीज; गहरी — हरीतिमा; जड़ — निद्रा; अमर — पुत्र

2. (क) अँधेरा, तिमिर, तम **(ख)** विश्व, संसार, दुनिया **(ग)** ज्योति, उजाला, रोशनी **(घ)** जिंदगी, प्राण, जान

3. (ख) अरुणिमा **(ग)** लालिमा **(घ)** मधुरिमा **(ङ)** नीलिमा **(च)** रक्तिमा

4. (क) उजाला **(ख)** महान **(ग)** मरण **(घ)** मुक्त **(ङ)** चेतन **(च)** अनिद्रा **(छ)** बाहर **(ज)** नश्वर **(झ)** महान

अध्याय-10. बिना विचारे जो करे

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)

लिखित प्रश्न

1. (क) भारवि एक महान कवि थे। उनकी गणना संस्कृत के अमर कवियों में की जाती है।

(ख) भारवि अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए ससुराल गए थे। **(ग)** भारवि की पत्नी ने श्लोक को सौ स्वर्ण मुद्राओं में बेचा। **(घ)** राजा ने अपने दरबार में भारवि को राजकवि का पद दिया।

2. **(क)** भारवि के मन में अपने पिता के प्रति क्रोध इसलिए बढ़ता जा रहा था क्योंकि वे कभी भी उनकी प्रशंसा नहीं करते थे। **(ख)** भारवि के पिता उनकी प्रशंसा इसलिए नहीं करते थे जिससे उनके अंदर अभिमान न पैदा हो जाए। मन में अभिमान पैदा होते ही व्यक्ति का पतन शुरू हो जाता है। वे अपने पुत्र का उत्कर्ष देखना चाहते थे, अपकर्ष नहीं। इसीलिए वे उसके सामने उसकी प्रशंसा नहीं करते थे। **(ग)** भारवि अपनी पत्नी को लेकर ससुराल इसलिए चले गए क्योंकि वे अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहते थे।
3. भारवि के पिता भारवि की उसके सामने प्रशंसा इसलिए नहीं करते थे, जिससे कि उसके अंदर अहंकार उत्पन्न न हो। थोड़ा-सा बल, बुद्धि, धन, ऐश्वर्य और पद मिलने से मनुष्य अहंकारी हो जाता है, मनुष्य के अंदर जब अंहकार उत्पन्न हो जाता है तभी से उसका विनाश शुरू हो जाता है। मैं एक पिता हूँ, भारवि का उत्कर्ष देखना चाहता हूँ अपकर्ष नहीं। अत: मैं उसके सामने इस कारण उसकी प्रशंसा नहीं करता हूँ।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** राजवैद्य **(ख)** राजकवि **(ग)** राजमहल **(घ)** राजदरबार **(ङ)** महारानी **(च)** राजपुत्र **(छ)** राजतिलक **(ज)** राजसिंहासन
2. **(क)** अल्प + अवस्था — स्वर संधि **(ख)** उत् + नति — व्यंजन संधि **(ग)** क्रोध + अंध — स्वर संधि **(घ)** उत् + कर्ष — व्यंजन संधि **(ङ)** धन + उपार्जन — गुण संधि
3. **(क)** भौचक्का रह जाना — रचित की असलियत जानकर सभी हतप्रभ रह गए।
   (ख) गायब हो जाना — महिला का मोबाइल छीनकर चोर तुरंत ही उड़न-छू हो गया।
   (ग) टाल-मटोल करना — रियाज से सलीम ने उसकी पुस्तक माँगी तो वह आनाकानी करने लगा।

अध्याय-11. सत्साहस

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** नीच श्रेणी का साहस चोर, डाकुओं और बुरे राजाओं में पाया जाता है। **(ख)** प्रत्येक साहसी मनुष्य में हृदय की पवित्रता तथा उदारता, चरित्र की दृढ़ता और कर्तव्यपरायणता आदि गुण होने चाहिए। **(ग)** सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पल-पल आया करता है।

2. **(क)** बादशाह मुहम्मद आदिल पर भरे दरबार में एक मुसलमान युवक के आक्रमण का कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर ज़ब्त कर ली थी। **(ख)** इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुज़रते हैं। राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित इच्छा को पूरा करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं। ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है। **(ग)** सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं, धन-मान इत्यादि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं —हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है— 'कर्तव्यपरायणता'।
3. जिस मनुष्य को अपने कर्तव्य का कुछ पता नहीं वह कभी भी परोपकारी या समाज का शुभचिंतक नहीं हो सकता है।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** क्रोध + अंध **(ख)** स्व + अर्थ **(ग)** नि: + तेज **(घ)** इति + आदि **(ङ)** तथा + अपि **(च)** परम + आवश्यक **(छ)** आत्म + उत्सर्ग **(ज)** धन + उपार्जन **(झ)** सहायता + अर्थ **(ञ)** सत् + साहस **(ट)** मद + अंध **(ठ)** पर + उपकार
2. **(क)** प्रशंसनीय **(ख)** कर्तव्यपरायण **(ग)** क्रोधांध **(घ)** मदांध **(ङ)** इतिहासकार
3. **(क)** बुरी तरह लड़ना — तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान दुश्मन सेना पर काल बनकर टूट पड़े। **(ख)** मर जाना — दोनों शेर आपस में लड़ते-लड़ते ठंडे हो गए। **(ग)** मन में बहुत अधिक क्रोध पैदा हो जाना। — देश पर दुश्मन की सेना के आक्रमण से सभी युवाओं का रक्त उबल पड़ा। **(घ)** हार मानना — हमें कठिनाइयों के सामने सिर नहीं झुकाना चाहिए।

अध्याय-12. अशोक का अंतिम युद्ध

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** अशोक मगध का राजा था। **(ख)** शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की सेना को किले के फाटक से बाहर निकलते देखकर अशोक और उसके सैनिकों की तलवारें खिंची की खिंची रह गईं। **(ग)** पदमा अशोक के साथ द्वंद्व युद्ध करना चाहती थी। **(घ)** अशोक ने प्रतिज्ञा की कि वह कभी भी हथियार नहीं उठाएगा।
2. **(क)** अशोक शिविर में चिंतित इसलिए टहल रहे थे क्योंकि चार साल से युद्ध हो रहा था और कलिंग को जीता नहीं जा सका था। **(ख)** अशोक ने अपने सैनिकों से प्रण करने को कहा कि या तो वे कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु

की गोद में सो जाएँगे। **(ग)** अशोक ने अपने सैनिकों को स्त्रियों पर शस्त्र न उठाने का आदेश दिया।

3. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियाँ उस समय की हैं जब अशोक अपनी सेना के साथ कलिंग के दुर्ग के सामने खड़ा हो जाता है। तभी किले का फाटक खोलकर कलिंग महाराज की पुत्री पुरुष वेश में स्त्रियों की सेना के साथ निकलती है और अपनी सेना को संबोधित करते हुए कहती है कि वे वीर कन्या, वीर भगिनी और वीर पत्नी हैं। जिस सेना ने उनके पिता, भाई, पुत्र तथा पति की हत्या की है। उससे युद्ध करें तथा प्रतिज्ञा करें कि अपनी मातृभूमि को पराधीन होते देखने से पूर्व सदा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दें।

4. **(क)** अशोक ने — मनोगतभाव
   (ख) द्वारपाल ने — अशोक से
   (ग) पदमा ने — अशोक से
   (घ) अशोक ने — पदमा से
   (ङ) अशोक ने — बौद्ध भिक्षु से

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** वीर + अंगना — स्वर संधि **(ख)** पर + अधीन — स्वर संधि **(ग)** पूर्ण + आहुति — स्वर संधि
2. **(क)** संवाद देने वाला व्यक्ति — तत्पुरुष समास **(ख)** गुप्त रूप से सूचना देने वाला — तत्पुरुष समास **(ग)** सेना का पति — तत्पुरुष समास **(घ)** विपक्षी के सम्मुख हथियार डालना — अव्ययीभाव समास **(ङ)** माता की भूमि अर्थात जन्मभूमि — तत्पुरुष समास **(च)** शस्त्रों से सज्जित — तत्पुरुष समास **(छ)** मंत्र से मुग्ध — तत्पुरुष समास।
3. **(क)** मर जाना — युद्ध में लड़ते-लड़ते दोनों भाई मृत्यु की गोद में सो गए। **(ख)** युद्ध करना — सुनीधि पुलिस के आने तक डाकुओं से लोहा लेती रही। **(ग)** मर जाना — हमें उन क्रांतिकारियों को याद करना चाहिए जिन्होंने हमारी स्वतंत्रता के लिए सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर ली। **(घ)** विधवा बना देना — सुकमा में नक्सलवादियों ने सैनिकों को मारकर कई माँगों का सिंदूर पोंछ दिया। **(ङ)** पुत्र की हत्या कर देना — ट्रक ने अंचित को कुचलकर अंजना की गोद सूनी कर दी।

अध्याय-13. हल्दीघाटी का युद्ध

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** पृथ्वी पर कट कटकर हाथियों के सूँड़ गिरे। **(ख)** 'मैं कर लूँ रक्त स्नान कहाँ?' महाराणा प्रताप अकबर के सेनापति राजा मानसिंह के रक्त में स्नान करना चाहते थे। **(ग)** 'राणा बढ़ आया हाथी पर' इस पंक्ति में राजा मानसिंह के हाथी की बात हो रही है। **(घ)** महाराणा प्रताप घोड़े पर चढ़कर चारों ओर से सेना की रखवाली करते हुए घमासान युद्ध कर रहे थे।

2. **(क)** 'मेवाड़ केसरी देख रहा केवल रण का न तमाशा था' पंक्ति का आशय है कि युद्ध में महाराणा प्रताप युद्ध को देख ही नहीं रहे थे बल्कि स्वयं लड़ भी रहे थे। **(ख)** 'मानो साक्षात कपाली था' के द्वारा कवि कहना चाहता है कि युद्ध में महाराणा प्रताप एकदम साक्षात् कपाली अर्थात् देवी काली के रूप में दिखाई दे रहे थे। **(ग)** मानसिंह को देखते ही महाराणा प्रताप का खून खौल उठा और वे क्रोध से भर गए।

3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि महाराणा प्रताप अकबर के सेनापति मानसिंह को ढूँढ़ते हुए पूछते हैं कि मानसिंह कहाँ है? मैं उसे मारकर उसके रक्त में स्नान करना चाहता हूँ तथा देखना चाहता हूँ कि मुगलों का वह अभिमान कहाँ है कि उनकी विजय निश्चित है तभी महाराणा प्रताप ने देखा कि मानसिंह हाथी पर बैठकर लड़ रहा है तथा हाथी के ऊपर अकबर का राजचिह्न अंकित है।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** स्वयं कीजिए।

2. **(क)** गज, मतंग, हस्ति **(ख)** बाजि, तुरंग, अश्व **(ग)** युद्ध, लड़ाई, संग्राम **(घ)** खून, लहू, रुधिर **(ङ)** आग, अग्नि, पावक **(च)** शत्रु, दुश्मन, विरोधी

3. **(क)** महाकाल —सबसे बड़ा काल (शिवजी) **(ख)** महाराजा —सबसे बड़ा राजा **(ग)** महाशोक —सबसे बड़ा शोक **(घ)** महारोग —सबसे बड़ा रोग **(ङ)** महाभोज —सबसे बड़ा भोज।

अध्याय-14. बूढ़ा कुत्ता

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** एक मित्र ने कहा, ''कुचिला खिला दीजिए, मर जाएगा।'' एक बंदूकधारी मित्र बोले, ''पचास पैसे भी न बरबाद होंगे, गोली से उड़ा देता हूँ।'' **(ख)** जब लेखक ने गाँव से दूर हटकर खेत में घर बनवा लिया, तो घर की रखवाली कुत्ता करता था। **(ग)** लेखक को कुत्ते का भौंकना तब बुरा लगता है जब तुरंत नींद आई हो। **(घ)** लेखक को कुत्ते को मार देने का विचार इसलिए उचित नहीं लगता क्योंकि कुत्ता बहुत ही स्वामिभक्त, कर्तव्यपरायण और साहसी था।

2. **(क)** जब कुत्ता लेखक के पास आया, तब उसका शरीर धूलि धूसरित था। उसके बदन पर दाँत के कई दाग थे, जिनसे ताज़ा खून टपक रहा था। **(ख)** लेखक के घर में एक विदाई होने वाली थी। दिनभर धूमधाम रही, रात में बड़ी देर तक गाँव की स्त्रियाँ आती-जाती रहीं। जब घर के लोग सोने गए, तो ऐसे सोए कि जैसे घोड़े बेचकर सोए हों और यह कुत्ता घर के सामने आकर गला फाड़-फाड़कर भौंकता रहा। अचानक रानी की नींद टूटी और वे अपने कमरे से बाहर हुई तो कुत्ता घर के पीछे की ओर भौंकता हुआ दौड़ा। उन्हें कुछ संदेह हुआ। वे लोगों को जगाने लगीं, शोर करने लगीं; जब रोशनी

की गई, देखा गया, घर में सेंध है; कुछ चीज़ें चली गई हैं। किंतु इस कुत्ते ने ही बचा लिया, नहीं तो उस दिन सर्वनाश ही हो गया होता। **(ग)** जब लेखक की पत्नी पालकी पर अपने मैके गई, यह उनकी पालकी के साथ-साथ उनके मैके तक गया और जब तक वहाँ रहीं, सदा उनके पलंग के नीचे ही सोता रहा।

3. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कुत्ते के बारे में बताते हुए कहता है कि कुत्ता कुछ ही दिनों में जान गया था कि घर में लेखक की नहीं उसकी पत्नी की चलती है।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** स्वामी का भक्त — तत्पुरुष समास **(ख)** कर्तव्य का पालन करने वाला — तत्पुरुष समास **(ग)** मोटा और ताजा — द्वंद्व समास **(घ)** धूलि और धूसरित — द्वंद्व समास।

2. **(क)** बाबूगिरी **(ख)** नेतागिरी **(ग)** चमचागिरी **(घ)** बढ़ईगिरी **(ङ)** दादागिरी **(च)** गुंडागिरी

3. **(क)** पूरी तरह निश्चिंत होकर सोना — घर के लोग घोड़े बेचकर सो गए और चोर सारा सामान लेकर भाग गए। **(ख)** मर जाना — बाण लगते ही श्रवणकुमार का वारा-न्यारा हो गया। **(ग)** सब्र करना — पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर अर्जुन ने अपने दिल पर पत्थर रख लिया।

अध्याय-15. सत्यवादिता

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** गायों का झुंड पर्वत की तलहटी में चरने जाया करता था। **(ख)** नंदिनी जब गायों के झुंड के आगे-आगे चलती, तो ऐसा लगता, जैसे उस झुंड की रानी हो। **(ग)** जब बछड़ा गाय से कहता है कि वह उसके बिना जीवित नहीं रह सकता तो इस बात से पता चलता है कि बछड़ा अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था। **(घ)** नंदिनी की सच्चाई और बछड़े के प्रेम को देखकर बाघ का कठोर हृदय पिघल गया।

2. **(क)** एक दिन चरते-चरते नंदिनी दूर निकल गई। उसे यह पता ही नहीं चला कि वह कब अपने झुंड से अलग हो गई। जब उसने मुँह उठाकर देखा, तो वह घने जंगल में थी। उसने चारों ओर दृष्टि घुमाकर देखा, परंतु उसे अपना झुंड दिखाई न दिया। **(ख)** बाघ ने नंदिनी को घर जाने की अनुमति इसलिए दी ताकि वह अपने बछड़े को दूध पिलाकर वापस आ सके। **(ग)** बछड़ा गाय के साथ बाघ के पास इसलिए आया क्योंकि वह अपनी माँ के बिना जीवित नहीं रहना चाहता था।

3. इस पंक्ति में गाय बछड़े को समझाते हुए कहती है कि बेटा, बच्चे बड़ों की बात मानते हैं, ज़िद नहीं करते। अत: तुम यहीं पर रहो मेरे साथ मत चलो।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** संयुक्त **(ख)** मिश्र **(ग)** सरल **(घ)** संयुक्त **(ङ)** संयुक्त

2. **(क)** प्रतीक्षारत — प्रतीक्षा में लीन **(ख)** सेवारत — सेवा में लीन **(ग)** कर्मरत — कर्म में लीन **(घ)** प्रेमरत — प्रेम में लीन **(ङ)** धर्मरत — धर्म में लीन

3. **(क)** दया आना — बच्ची का मासूम चेहरा देखकर भयानक डाकू का हृदय पिघल गया। **(ख)** आश्चर्यचकित रह जाना — रजत की बहादुरी देखकर निशा ठगी-सी खड़ी रह गई। **(ग)** अचंभित रह जाना — छोटे से बच्चे को खतरनाक करतब करते देखकर सारे लोग हतप्रभ रह गए।

अध्याय-16. प्रशंसा का चक्कर

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** लेखक को गुलाब का इत्र, जुही की माला, रेशम का कुर्ता, खोए की बरफी, दही की गुझियाँ, असली घी की जलेबी और मगही पान आदि चीज़ें प्रिय हैं। **(ख)** लेखक के वही दोस्त लंबे समय तक टिके जो उसकी प्रशंसा करते थे। **(ग)** जब लेखक के प्रशंसक घर पर आए, तब लेखक की पत्नी मैके गई हुई थी। **(घ)** लेखक के प्रशंसक मित्र उसका महीनेभर का वेतन ले गए थे।

2. **(क)** लेखक अपनी प्रशंसा के लिए कुछ भी कर सकता है और कुछ भी सह सकता है। **(ख)** लेखक को रेल में जब उसकी रचनाओं के एक प्रशंसक अनायास ही मिल गए, तो उसे ऐसा लगा मानो शब्दों की बूँद-बूँद से अमृत बरस रहा था। यात्रा की सारी थकान, डिब्बे की ठेल-पेल और साहित्य चर्चा से उत्पन्न उमस जैसे सब शीतल, तरल और रसमय हो चला था। लेखक के मन की बंद कली जैसे खट करके खिल उठी। **(ग)** प्रशंसक के जाने के बाद लेखक पड़ा-पड़ा यही सोचता रहा था कि इसी प्रकार कोई सहृदय समालोचक मिल जाए, तो उसे व्यास, कालिदास, मिल्टन, शेक्सपीयर बनते अब देर नहीं लगेगी।

3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कहता है कि जब प्रशंसक लेखक की प्रशंसा करता है तो लेखक को लगता है कि उसके शब्दों से मानो अमृत बरस रहा हो। लेखक अपनी यात्रा की सारी थकान, डिब्बे की ठेल-पेल और साहित्य चर्चा से उत्पन्न उमस स्वशीतल हो गई थी और माहौल रसमय हो गया था। लेखक अपनी प्रशंसा सुनकर कली के समान खिल गया था।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** सद्व्यवहार — अच्छा व्यवहार **(ख)** सद्भावना — अच्छी भावना **(ग)** सदुपयोग — अच्छा उपयोग **(घ)** सदाचरण — अच्छा आचरण **(ङ)** सद्मार्ग — सही मार्ग।

2. स्वयं कीजिए।

3. **(क)** बहुत अधिक प्रसन्न होना — कक्षा में प्रथम आने पर वासू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। **(ख)** मन प्रसन्न हो जाना — उमेश से अपनी प्रशंसा सुनकर मेरा दिल बाग-बाग हो गया। **(ग)** जो सामने वाले को अच्छा लगे वही बात कहना — रमेश की बातों का विश्वास मत करना, वह तो सदैव मुँहदेखी कहता है।

अध्याय-17. झाँसी की रानी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** कानपुर के नाना लक्ष्मीबाई को छबीली कहकर पुकारते थे। **(ख)** झाँसी के राजा के मरने पर डलहौजी खुश हुआ। **(ग)** सिंधिया ग्वालियर के राजा और अंग्रेजों के मित्र थे। **(घ)** लक्ष्मीबाई की मृत्यु तेईस वर्ष की उम्र में हुई।
2. **(क)** 'सिंहासन हिल उठे' का अर्थ है कि जब सन् 1857 में रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी तो देश के अन्य राजाओं के सिंहासन हिल उठे। **(ख)** लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल नकली युद्ध, व्यूह रचना, शिकार करना, सेना घेरना, दुर्ग तोड़ना आदि थे। **(ग)** अंतिम समय में रानी के सामने एक नाला आ गया जिसे पार करना आसान नहीं था। घोड़ा भी नया था वह भी अड़ गया। तभी पीछे से अंग्रेज सैनिक आ गए और लक्ष्मीबाई पर वार करते गए जिससे रानी की मृत्यु हो गई।
3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि जब रानी लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा से हुआ तो पूरे महल में प्रसन्नता और उजाला छा गया। लेकिन काल की गति धीरे-धीरे आई और राजा की मृत्यु हो गई। रानी लक्ष्मीबाई के तीर चलाने वाले हाथों में शायद चूड़ियाँ अच्छी नहीं लगती थी इसलिए रानी कम आयु में ही विधवा हो गई। झाँसी के राजा की जब मृत्यु हुई तो उनके कोई पुत्र नहीं था। यह आघात रानी के लिए असहनीय था।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** गुलामी **(ख)** कायर **(ग)** दुर्भाग्य **(घ)** सधवा **(ङ)** हर्ष **(च)** नरक **(छ)** पराजय **(ज)** सम **(झ)** मित्र **(ञ)** दानव **(ट)** परतंत्रता **(ठ)** मृत
2. **(क)** गर्वित **(ख)** मुदित **(ग)** फलित **(घ)** रचित **(ङ)** लिखित **(च)** सीमित **(छ)** पुष्पित **(ज)** पल्लवित
3. **(क)** क्रोध आना — राजा के भृकुटी तानते ही अपराधी थर-थर काँपने लगा। **(ख)** परास्त होना — क्रिकेट विश्व कप में भारत के सामने पाकिस्तान ने हमेशा मुँह की खाई है। **(ग)** अधिक प्रसिद्ध होना — अंजलि की मधुर आवाज ने चारों ओर धूम मचा दी।

अध्याय-18. महाराज का इलाज

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** महाराज मोहाना को वहम की बीमारी थी। **(ख)** महाराज असाधारण, दुर्बोध रोग के बोझ को उठाने में गर्व का अनुभव करते थे। **(ग)** महाराज की चिकित्सा के लिए सम्मेलन सितंबर के महीने में हुआ करता था। **(घ)** महाराज को अपने रोग की तुलना मेहतर से करने की बात पर गुस्सा आ गया।
2. **(क)** महाराज की चिकित्सा देश-विदेश के बड़े-बड़े डॉक्टरों ने की थी। **(ख)** कोठी के बड़े हॉल में मेज़-कुरसियों के बत्तीस जोड़े अंडाकार लगाए गए थे, जैसे विशेषज्ञों की कॉन्फ्रेंसों की कार्य प्रणाली होती है। प्रत्येक मेज़ पर एक डॉक्टर का नाम लिखा था और मेज़ पर उस डॉक्टर के नाम और उपाधि सहित छपे कागज़ मौजूद थे। सभी मेज़ों पर बहुत कीमती फाउंटेन पेन और पेंसिल के सैट केसों में सजे हुए थे। कलमों, पेंसिलों और केसों पर भी खुदा हुआ था —'महाराज मोहाना की ओर से भेंट।' डॉक्टरों के बैठने का क्रम अंग्रेज़ी वर्णमाला में डॉक्टरों के नाम के पहले अक्षर के क्रम के अनुसार था। **(ग)** जब डॉक्टर संघटिया ने महाराज की बीमारी की तुलना एक मेहतर से की तो महाराज क्रोध में भर गए तथा स्वयं उठकर बाहर चले गए। असल में महाराज को कोई बीमारी नहीं थी उन्हें बीमारी का वहम था। डॉक्टर संघटिया के उपाय से महाराज का इलाज इस प्रकार हो गया।
3. **भावार्थ**—महाराज का इलाज करने देश-विदेश से बड़े से बड़े डॉक्टर आए लेकिन वे भी महाराज की बीमारी का इलाज करने में असफल रहे क्योंकि महाराज को कोई बीमारी थी ही नहीं।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **प्रधान उपवाक्य (क)** डॉक्टरों से अनुरोध किया गया **(ख)** एक डॉक्टर का विचार था **(ग)** वे विस्मय से देख रहे थे

   आश्रित संज्ञा उपवाक्य (क) कि वे अपनी जाँच और निदान के संबंध में परस्पर विचार करके अपना मंतव्य लिख लें। **(ख)** कि महाराज को एक वर्ष चेकोस्लोवाकिया में 'कार्लोविवारी' के चश्में में स्नान करना चाहिए। **(ग)** कि महाराज पहिए लगी आरामकुरसी से उठकर खड़े हो गए हैं।
2. **(क)** असाध्य **(ख)** असाधारण **(ग)** दुर्बोध **(घ)** मध्याह्न **(ङ)** दुस्साध्य **(च)** दयनीय
3. **(क)** लागत के अनुरूप अच्छा लाभ हुआ। **(ख)** भगवान से अपने कष्टों के निदान के उपाय जानना चाहिए। **(ग)** हमारे देश में आतिथ्य सत्कार को सबसे बड़ा समझा जाता है। **(घ)** इस बात को कहने में तुम्हारा मंतव्य क्या है? **(ङ)** मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे एक बार मौका और दीजिए।